श्रीहितं वन्दे
श्रीराधावल्लभो जयति । श्रीहित हरिवंश जयति ।।
राधावल्लभ श्री हरिवंश । श्री वृन्दावन श्री वनचन्द्र ।।

निभृत निकुंज विलासी श्री राधावल्लभ जी महाराज का व्याहुला (विवाह उत्सव)

(श्रीहित गोविन्दलाल गोस्वामी कृत पद व्याख्या सहित

श्रीहित वृन्दावन धाम रस रीति प्रवर्तक बंशी अवतार
अनन्त श्री गोस्वामी श्रीहित हरिवंश महाप्रभु

www.RadhaVallabhMandir.com

परम आराध्य श्री राधाबल्लभलाल जी

वृन्दावन

व्याहुलै कौ समाज प्रारम्भ

राग गौरी

खेलत रास दुलहिनी दूलहु ।
सुनहु न सखी सहित ललितादिक, निरखि-निरखि नैननि किन फूलहू ।।
अति कल मधुर महा मोहन धुनि, उपजत हंस सुता के कुलहू ।
थेई-थेई वचन मिथुन मुख निरसत, सुनि-सुनि देह दसा किन भूलहु ।।
मृदु पदन्यास उठत कुंकुम रज, अद्भुत बहत समीर दुकूलह ।
कबहुं श्याम-श्यामा दशनांचल, कच-कुच हार छुबत भुज मूलहु ।।
अति लावण्य रूप अभिनय गुन, नाहिन कोटि काम समतूलहु ।
भृकुटि विलास हास रस बरसत, (जैश्री) हित हरिवंश प्रेम रस झूलहु ।।

व्याहुल के पद

राग विहागरौ

सखियन के उर ऐसी आई। ब्याह रचैं सुखदाई।।
यहै बात सबके मन भाई । आनन्द मोद बढ़्यौ अधिकाई।।
बढ़्यौ आनन्द मोद सबकैं महाप्रेम सुरँग रँगी।
और कुछ न सुहाई तिनकौं युगल सेवा सुख पगी।
निशि-द्यौस जानत नाहिं सजनी एक रस भींजी रहैं।
गोप-गोपिनु आदि दुर्ल्लभ तिहिं सुखहि दिन प्रति लहैं।।१।।

श्री राधावल्लभ लाल की तत्सुखी सखियों के ह्रदय (मन) में इच्छा हुई कि हम नित्य दम्पति श्री राधावल्लभ लाल के विवाह-विनोद की सुखद रचना करें और यह बात सभी सखियों के मन को बहुत अच्छी लगीए जिससे ज्यादा से ज्यादा आनन्दोल्लास की वृद्धि को प्राप्त होने लगी। विवाह उत्सव की बात से सबका उल्लास अतिशय वृद्धि को प्राप्त हो गया क्योंकि राधावल्लभ लाल की इन सखियों को अपने प्रिय राधावल्लभ लाल की सेवा के अतिरिक्त अन्य कुछ भी अच्छा नहीं लगता, हमेशा रस में भीगी रहने के कारण इन्हें न दिन का बोध होता, ना ही रात्रि का। जो रस प्रेम बृज के गोप-गोपिन को भी अत्यन्त दुर्लभ है उस असाधारण सुख को यह सखियाँ निरन्तर प्राप्त करती रहती है।।१।।

यह नव दुलहिनि अति सुकुमारी। ये नव दूलाहुलाल बिहारी।।
रैंग भीने दोऊ प्राणनि पियारे। नव सत अंगन अंग सिंगारे।।
नव सत सिंगारे अंग अंगन झलक तन की अति बढ़ी।
मौर-मौरी सीस सोहैं मैन पानिप सुख चढ़ी जलज सुमन सु सेहरे रतन हीरि जगमगैं।
देखि अद्भुत रूप मनमथ कोटि रति पाँयन लगैं।।२।।

www.RadhaVallabhMandir.com

शोभा मंडप कुंजन द्वारैं। हित की बाँधी बंदन वारैं।।
कुमकुम सौ लै अजिर लिपायौ। अद्भित मोतिन चौक पुरायौ।।
पुराय अद्भुत चौक मातिनु चित्र रचना बहु करी।
आय दोऊ ठाढ़े भये तहाँ सबन की गति मति हरी।।
सुरंग मेंहदी रंग राचे चरण कर अति राजहीं।
विविध रागनि किंकिनी अरु मधुर नूपुर बाजहीं।।३।।

इन सखियों के प्राण रसिक प्रिया-प्रियतम हैं-नव-वधू अत्यन्त कोमल अंग वाली प्रिया एवं नव दूलह श्री लालबिहारी प्रियतम ये प्राण रसिक युगल (प्रिया-प्रियतम) सदैव प्रेम के रंग में भीजे रहते हैं, जिन्हें आज सखियों ने सोलह श्रृंगारों से वर-वधू को सुसज्जित किया है । युगल अंग की कान्ति अतिशय वृद्धि को प्राप्त हो रही हैं लालजू (कृष्णजी) के शीश पर मोर एवं प्रियाजी (राधाजी) के शीश पर मौरी सुशोभित हो रही हैं एवं दोनों के चेहरे पर कामजनित लावण्य टपक रहा है । सखियों ने पुष्प और मोतियों के सेहरे, जो रत्न और (उद्दीप्त) हीरों से चमक रहे हैं। प्रिया-प्रियतम के मुखारविन्द पर धारण कराये हैं । जिससे अद्भुत रूप निखर आया है जिससे कोटि-कोटि कामदेव एवं रति (कामदेव की पत्नी) प्रिया-प्रियतम के चरणों में गिर गये हैं ।।२।।

आज निकुँज के द्वार पर विवाह उत्सव की शोभा दर्शनीय है । जहाँ हितरूपी वन्दनवार बँधी हुई है । निकुँज के प्रांगण में केशर (कुम-कुम) से लेपन किया गया हैं । अद्भुत मोतियों से चौक पूरे गये हैं। सखियों ने मोतियों द्वारा तरह-तरह की रचनाओं से चौक को सुसज्जित किया किया है । जब प्रिया-प्रियतम वर-वधू के रूप में वहाँ आये तब अपने रूप सौन्दर्य से सखियों की गति-मति का हरण कर लिया । गहरे लाल रंग की मेंहदी से उनके चरण और हस्त कमल अत्यन्त शोभायमान हो रहे हैं । श्री राधावल्लभ लाल के चरणों के नूपुर और कोटि की किकंणियों का मधुर स्वर तरह की रागों की सृष्टि कर रहा है ।।३।।

वेदी सेज सुदेश सुहाई। मन दृग अंचल ग्रन्थि जुराई।।
रीति भाँति विधि उचित बनाई। नेह की देवी तहाँ पुजाई।।
पूजि देवि नेह की दोऊ रति विनोद बिहारहीं।
तिहि समै सखी ललितादि हित सौं हेरि प्राणन वारहीं।।
एक बैस सुभाव एकै सहज जोरी सोहनी।
एक डोरी प्रेम की ध्रुव बँधे मोहन मोहिनी।।४।।

राग विहागरौ

श्री वृन्दावन धाम रसिक मन मोहई।
दूलह-दुलहिनि ब्याह सहज तहाँ सोहई।।१।।
नित्य सहाने पट अरु भूषण साजहीं।
नित्य नवल सम वैसे एक रस राजहीं।।२।।

सोभा कौ सिर मौर चंद्रिका मोर की।
बरनी न जाई कछू छवि नवल किशोर की।।३।।
सुभग माँग रँग रेख मनों अनुराग की।
झलकत मौरी सीस सुहाग की।।४।।
मणिनु खचित नव कुंज रही जगमग जहाँ।
छबि कौ बन्यौ बितान सोई मंडप तहाँ।।७।।

सखियों ने जो यज्ञ वेदी बनाई है वह स्थूल वेदी न होकर प्रिया-प्रियतम की सुरत शय्या ही इस रस में वेदिका है। सखियों ने प्रिया-प्रियतम के अँचलों की गाँठ लगाई है इसके बाद सखियों ने विविध रीति से विवाह उत्सह को पूर्ण करके प्रिया-प्रियतम के द्वारा अन्त में प्रेम की देवी का पूजन कराया। प्रेम की देवी का पूजन कर प्रिया-प्रियतम ने रति विनोद विहार के लिये निकुँज में प्रस्थान किया । इस समय के सुख का दर्शन कर ललिता आदि सभी सखियाँ प्रम विभोर हो अपने प्रिया-प्रियतम पर प्राणों को न्योछावर करने लगीं । सहज सुहावने प्रिया-प्रियतम का एक ही स्वभाव है और समवयसी हैं। मोहन मोहिनी (प्रिया-प्रियतम) एक ही प्रेम की डोर से बँधे हुऐ है ।।४।।

श्री हि वृन्दावन धाम रसिकों के मन को मोह लेने वाला धाम हैंए वर-वधू श्रीप्रिया-प्रियतम का विवाह यहीं सहज रूप से शोभा देता है।।१।।

विवाहोत्सव में प्रिया-प्रियतम नित्य ही विवाहकालीन वस्त्र एवं भूषण धारण करते रहते हैं। ये नव-दम्पत्ति वृन्दावन धाम में सदा नवकिशोर के रूप में विराजतम हैं।।२।।

जब प्रिया-प्रियतम विवाह के समय अपने शीश पर मयू चन्द्रिका धारण करके दूल्हे रूप में सुसज्जित होते है तब उन नवकिशोर की छवि का वर्णन करना असंभव हैं।।३।।

इसी प्रकार नवकिशोर की छवि का वर्णन करना असंभव है जब उनके शिरोभाग पर माँग भरी है और मौरी धारण करी हुइ है।।४।।

तरह-तरह की मणि रत्नों से उनका निकुँज सुसज्जित हो रहा है यही अवर्णनीय निकुँज का चौक ही वैवाहिक मण्डप है।।७।।

वेदी सेज सुदेस रची अति बानि कै।
भाँति-भाँति के फूल सुरंग बहु आनि कै।।६।।
गावत मोर मराल सुहाए गीत री।
सहचरि भरीं आनन्द करत रस रीति री।।७।।
अलबेले सुकुँवर फिरत तिहि ठाँवरी।
दृग अंचल परी ग्रन्थि लेत मन भाँवरी।।८।।
कँगना प्रेम अनूप कबहुँ नहिं छूटही।
पोयौ डोरी रूप सहज सो न टूटही।।९।।
रचि रहे कोमल कर अरु चरण सुरंग री।
सहज छबीले कुँवर निपुन सब अंग री।।१०।।

www.RadhaVallabhMandir.com

परम आराध्य श्री राधाबल्लभलाल जी

वृन्दावन

नूपर कंकण किंकणी बाजे बाजहीं।
निर्त्तत कोटि अनंग नागि सब लाजहीं।।११।।
बाढचौ है मन माहिं अधिक आनन्द री।
फूले थ्फरत किशोर वृन्दावन चन्द री।।१२।।
सखियन किये बहु चार अनेक विनोद री।
दूधा भाती हेत बढचौ मन मोद री।।१३।।
ललितलाल की बात जबहि सख्यिन कही।
लाज सहित सुकुमारी ओट पट दै रही।।१४।।

वैवाहिक यज्ञवेदी को सखियों ने तरह-तरह से सुगन्धित पुष्पों को संजोकर बनाया है ।।६।।

विवाह के इस सुअवसर पर वृन्दावन के मोरए हंस सुहावने गीत गा रहे है और आनन्दित सखियाँ विवाह की रस रीति का विस्तार कर रही हैं ।।७।।

अलबेले सुकुमार युगल वेदी के चारों ओर परिक्रमा दे रहे हैं। उनके अंचलों की गाँठ जुड़ी हुई हैं, उनके तन-मन भांवरी ले रहे हैं ।।८।।

कंगल जो उनकी (प्रिया-प्रियतम) पहुँचियों में आबद्ध है तरह-तरह के प्रयासों से भी नहीं छुडाया जा सका क्योंकि वह प्रिया-प्रियतम के सुन्दर रूप की डोर में पिरोया गया है सहज छूटता नहीं हैं ।।९।।

प्रिया-प्रियतम के सुकोमल हस्त एवं चरण मेंहदी रंग से सुसज्जित हैं । सौन्दर्यवान प्रिया-प्रियतम सौन्दर्य गुण एवं सभी श्रृंगार कलाओं में परम प्रवीण हैं ।।१०।।

प्रिया-प्रियतम के श्रीअंगों में धारण किये आभूषण, कंगन,किंकिणियाँ, नूपुर आदि अलंकृत आभूषण उनके गतिमान होने पर बज रहे हैं। ऐसी सखियों का नृत्य-दर्शन करके कोटि काम पत्नियाँ भी लज्जित हो रही हैं ।।११।।

आज श्रीलालजी के मन में अत्यधिक आनन्द की प्राप्ति हो रही है। इसलिये नवकिशोर वृन्दावनचन्द्र श्री लालजी प्रसन्न मन फूले-फूले फिर रहे हैं ।।१२।।

जब सखियों ने विवाह विनोद के सभी उपचार (कार्यक्रम) पूर्ण कराये और इसके बाद सखियों के मन में प्रिया-प्रियतम की दूधाभाती भोग (मिष्ठान, पकवान) कराने की इच्छा जाग्रत हुई तो इससे दम्पति का मन आन्नद से भर आया ।।१३।।

सखियों ने जब प्रिया जी से श्रीलालजू (कृष्ण जी) की रसमयी बात हास्य रूप से कही तो नव-वध ू नव-वधू प्रियाजी ने लज्जा के मारे मुखारविन्द को घूंघट से ढक लिया।।१४।।

● इस समय दूधाभाती भोग का पदा आता है ●

नमित ग्रीव छवि सींव कुँवरि नहिं बोलहीं ।

www.RadhaVallabhMandir.com

बुधि बल करत उपाय घूँघट पट खोलहिं।।१५।।
कनक कमल कर नील कलह अति कल बनी।
हँसत सखी सुख हेरि सहज सोभा घनी।।१६।।
बाम चरण सौं सीस लाल कौ लावहीं।
पानी वारि कुँवरि पर पियहिं पिवावहीं।।१७।।
मेलि सुगंध उगार सौ बीरी खावावहीं।
समझि कुँवरि मुसकाठ अधिक सुख पावहीं।।१८।।
और हास-परिहास रहसि रस रंग रह्यौ।
नित्यविहार विनोद यथा मति कछु कह्यौ।।१९।।
अंचल ओट असीम सखी सब देहिंरी।
पल-पल बढ़ौ सुहाग नैन सुख लैंहिरी।।२०।।
जैसे नवल विलास नवल नवला करैं।
मन-मनकी रुचि जान नेह विधि अनुसरैं।।२१।।
बैठी है निज कुंज कुँवरि मनमोहनी।
झलकल रूप अपार सहज अति सोहनी।।२२।।
चाहि-चाहि सो रूप रसि सिरमौररी।
भरी आए दोऊ नैन भई गति औररी।।२३।।

प्रियाजी अपने मुखारविन्द को झुकाकर मौन रह गई और लालजू अपने पूर्ण बुद्धिबल द्वारा उनके घूँघट को खोलने में लग गये ।।१५।।

इस समय गौर प्रिया के स्वर्ण के समान हस्त एवं लालजू के नील हस्त में जो प्रेम प्रकट हुआ उनका वर्णना करना अवर्णनीय है। उस सहज सुख की शोभा को देखकर सखियाँ हंस पड़ी ।।१६।।

लालजू के शीश को अपनी युक्ति से सखियाँ प्रिया जी के चरणों से स्पर्श कराने लगी। प्रिया जी पर जल उसार करके लालजू को पिलाने लगीं ।।१७।।

सखियाँ प्रिया को बीड़ा भोग लगाकर लालजू को अर्पित करने लगी। इस बात को जानकर लालजू मन ही मन खुश होकर मुस्काने लगे ।।१८।।

इस अवसर (दूधाभाती) पर अनेक प्रकार के हास-परिहास हुए। श्री ध्रुवदास जी कहते हैं कि मैंने अपनी बुद्धि के अनुसार ही विवाह लीला का थोड़ा ही वर्णन किया है ।।१९।।

सभी सखियाँ नव-दम्पत्ति को अपने आँचल की ओट करके आशीर्वाद देने लगी । और कहने लगी आपके इस नव-दम्पत्ति रूप का दर्शन कर, अपने नेत्रों को सुख देती रहें ।।२०।।

नव-दम्पत्ति नये-नये कुञ्ज विलास करते रहते हैं तत्सुखी सखियाँ नव-दम्पत्ति की रूचि को जानकर प्रेमविधि का अनुसरण करती रहती हैं ।।२१।।

www.RadhaVallabhMandir.com

परम आराध्य श्री राधाबल्लभलाल जी

वृन्दावन

आज मनमोहनी प्रिया अपने निकुंज भवन में विराजमान् हैं उनका अपार रूप सौन्दर्य झलक रहा है ।।

प्रियाजी के सुन्दर रूप का अवलोकन करके भी लाल जू के दोनों नेत्र प्रेम जल से भर आये हैं ।।२३।।

अति आनंद कौ मोद न उरहि समात री ।
रीझि-रीझि रस भीजि आपु बलि जात री ।।२४।।

अरुझे मन अरु नैन बढ्यौं अनुराग री ।
एक प्राण द्वै देह नागर अरु नागरी ।।२५।।

यौं राजत दोऊ प्रीतम हँसि मुसिकात री ।
निरखि परस्पर रूप न कबहूँ अघात री ।।२६।।

तिनही के सुख रंग सखी दिन रँगमगीं ।
और न कछू सुहाइ एक रस सब पगीं ।।२७।।

उभय रूप रससिंधु मगन जहाँ सब भए ।
दुर्लभ श्रीपति आदि सोई सुख दिन नए ।।२८।।

हित ध्रुव मंगल सहज नित्य जो गावही ।
सर्वोपरि सोई होई प्रेम रस पावही ।।२९।।

गोस्वामी श्री रूपलाल जी महाराज कृत (असीस कौ पद)

लाड़ी जू थारो अविचल रहौ जी सुहाग ।
अलक लड़े रिझवार छैल सों नित नव बढ़ौ अनुराग ।।
यों नित बिहरौ ललितादिक सँग वृन्दावन निजु बाग।
(जयश्री) 'रूप' अली हित युगल नेह ।।

श्रीलालजू के मन में अत्याधिक आनन्द समाता नहीं हैं । लालजू प्रियाजी के सौन्दर्य देखकर बार-बार रीझ-रीझकर बलिहार हो रहे हैं ।।२४।।

प्रिया-प्रियतम के हृदय एवं नेत्र परस्पर उलझ गये हैं, प्रियाजी एवं लालजू सदा सर्वदा एक प्राण दो देह हैं ।।२५।।

इसी प्रकार दोनों प्रिया-प्रियतम जू हँसते मुस्कराते हुए शोभायमान हैं । वे एक -दूसरे के रूप सौन्दर्य को देखकर तृप्त नहीं होते ।।२६।।

www.RadhaVallabhMandir.com

प्रिया-प्रियतम के सुख को देखकर सखियाँ भी रंगमयी (सुखी) रहती हैं । सखियों को प्रिया-प्रियतम के सुख के अलावा कुछ अच्छा नहीं लगता ।।२७।।

इस प्रकार प्रिया-प्रियतम (श्रीराधावल्लभलाल) के विवाह कर सभी रसिक मगन रहते हैं । यह सुख लक्ष्मीपति के लिये भी दुर्लभ है ।।२८।।

श्रीहित ध्रुवदास जी कहते हैं कि जो यह सहज नित्य मंगल का गान करेगा उसे प्रेम रस की प्राप्ति होगी ।।२९।।

आशीष - यहाँ सखियाँ नवदम्पत्ति को आशीर्वाद देती हुई कहती हैं- हे प्रिया जू आपको दाम्पत्य सौभाग्य सदा अचल रहे आपके लाड़ले प्रियतम में आपका अनुराग बढ़ता रहे । ललितादिक सखियों के साथ आपके निज वृन्दावन धाम में आप नित्यविचार करते रहें । श्रीहित रूपलालजी कहते हैं कि आपके नव-दाम्पत्य रूप का दर्शन कर हम सखियाँ अपना अहो भाग्य मानती हैं ।।

www.RadhaVallabhMandir.com